खंड: 1, अंक: 3 नवंबर 2022 DELHIN28953

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

राज्यीय चुनाव, राजनीतिक प्रभाव: हिमाचल, गुजरात एवं दिल्ली

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य संपादक

प्रो सुनील कुमार चौधरी

संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज
डॉ संध्या वर्मा
डॉ महेश कौशिक

डॉ अभिषेक नाथ
डॉ आशीष कुमार शुक्ल
राम किशोर

©सीजीएस 2022

रूपांकन: काजल

संश्लेषण

राज्यीय चुनाव, राजनीतिक प्रभावः हिमाचल, गुजरात एवं दिल्ली

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. तीन राज्य, तीन दल, तीन परिणाम — डॉ महेश कौशिक 1—4
2. हिमाचल प्रदेश की राजनीति में मतदान व्यवहार का अध्ययन — सृष्टि, विकास यादव 5—7
3. हिमाचल प्रदेश व गुजरात राज्य में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन — चंद्रिका आर्य, दृष्टि साह 8—14
4. गुजरात विधानसभा चुनावः एक विश्लेषण — अमित बाजपेयी 15—18
5. सी जी एस समीक्षा 2022ः दिल्ली नगर निगम चुनाव — यश तनवर —19—20

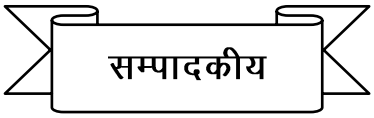

सम्पादकीय

नियमितता एवं निरंतरता के अपने संकल्प के साथ वर्ष 2018 से हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें अत्यंत उल्लास की अनुभूति हो रही है। अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से वैश्विक अध्ययन केंद्र अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखने में सक्रियता व सराहनियता के साथ संकल्पित है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के प्रति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा का परिचायक है।

वर्ष 2022 का नवम्बर माह भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में अहम भूमिका निभाता है। यह माह भारत के दो राज्यों एवं एक केंद्र शासित प्रदेश के चुनावी भाग्य के निर्धारण का भी मापदंड है। राजनीतिक विश्लेषकों ने हिमाचल प्रदेश, गुजरात एवं दिल्ली के इन चुनावों को क्वार्टर फाइनल की संज्ञा दी है। हिमाचल प्रदेश की 68 व गुजरात की 182 विधानसभाओं के चुनाव के लिए मुख्य राष्ट्रीय दलों – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी के साथ–साथ आम आदमी पार्टी ने भी अपने आप को प्रतिर्स्पधा में रखा। जहाँ गुजरात विधानसभा का चुनाव कार्यकारी भाजपा सरकार के लिए एक मुख्य चुनौती रहा वहीं आम आदमी पार्टी अपने उदीयमान राजनीतिक भविष्य को साकार करने के संकल्प में लगी प्रतीत हुई। 'राज नहीं रिवाज' पर आधारित हिमाचल का विधानसभा चुनाव दोनों मुख्य राष्ट्रीय दलों के मध्य ही प्रतिर्स्पधात्मकता का प्रतीक रहा। दिल्ली नगरपालिका के 250 वार्डस् का चुनाव भी भाजपा एवं आम आदमी पार्टी के मध्य एक–दिवसीय क्रिकेट मैच की तरह कम रोमांचकारी नहीं रहा।

शांतिप्रिय लोकतंत्र के क्रांतिकारी प्रचार–प्रसार ने तीनों राज्यो की चुनावी राजनीति को 2024 लोकसभा चुनाव के लिए एक बार पुनः ज्वलंत कर दिया। इन राज्यों के चुनावों का राष्ट्रीय राजनीति पर क्या प्रभाव होगा इसका अनुमान आगामी समय ही बता पायेगा।

चुनावी लोकतंत्र की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'राज्यीय चुनाव, राजनीति प्रभावः हिमाचल, गुजरात एवं दिल्ली' विषय पर लेख आमंत्रित किये। पाँच उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ स्वातन्त्र्योत्तर भारत के परिवर्तनीय आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र

चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही हम अपने आगामी समसामयिक अंकों में अत्याधिक गुणात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।

संपादक मंडल

बुधवार, 14 दिसम्बर 2022

सम्पादकीय

नियमितता एवं निरंतरता के अपने संकल्प के साथ वर्ष 2018 से हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें अत्यंत उल्लास की अनुभूति हो रही है। अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से वैश्विक अध्ययन केंद्र अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखने में सक्रियता व सराहनियता के साथ संकल्पित है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के प्रति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा का परिचायक है।

वर्ष 2022 का नवम्बर माह भारत क लोकतांत्रिक इतिहास में अहम भूमिका निभाता है। यह माह भारत के दो राज्यों एवं एक केंद्र शासित प्रदेश के चुनावी भाग्य के निर्धारण का भी मापदंड है। राजनीतिक विश्लेषकों ने हिमाचल प्रदेश, गुजरात एवं दिल्ली के इन चुनावों को क्वार्टर फाइनल की संज्ञा दी है। हिमाचल प्रदेश की 68 व गुजरात की 182 विधानसभाओं के चुनाव के लिए मुख्य राष्ट्रीय दलों – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी के साथ–साथ आम आदमी पार्टी ने भी अपने आप को प्रतिर्स्पधा में रखा। जहाँ गुजरात विधानसभा का चुनाव कार्यकारी भाजपा सरकार के लिए एक मुख्य चुनौती रहा वहीं आम आदमी पार्टी अपने उदीयमान राजनीतिक भविष्य को साकार करने के संकल्प में लगी प्रतीत हुई। 'राज नहीं रिवाज' पर आधारित हिमाचल का विधानसभा चुनाव दोनों मुख्य राष्ट्रीय दलों के मध्य ही प्रतिर्स्पधात्मकता का प्रतीक रहा। दिल्ली नगरपालिका के 250 वार्डस् का चुनाव भी भाजपा एवं आम आदमी पार्टी के मध्य एक–दिवसीय क्रिकेट मैच की तरह कम रोमांचकारी नहीं रहा।

शांतिप्रिय लोकतंत्र के क्रांतिकारी प्रचार–प्रसार ने तीनों राज्यो की चुनावी राजनीति को 2024 लोकसभा चुनाव के लिए एक बार पुनः ज्वलंत कर दिया। इन राज्यों के चुनावों का राष्ट्रीय राजनीति पर क्या प्रभाव होगा इसका अनुमान आगामी समय ही बता पायेगा।

चुनावी लोकतंत्र की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'राज्यीय चुनाव, राजनीति प्रभावः हिमाचल, गुजरात एवं दिल्ली' विषय पर लेख आमंत्रित किये। पाँच उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ स्वातन्त्र्योत्तर भारत के परिवर्तनीय आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र

चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही हम अपने आगामी समसामयिक अंकों में अत्याधिक गुणात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।

संपादक मंडल

बुधवार, 14 दिसम्बर 2022

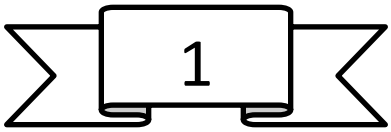

तीन राज्य, तीन दल, तीन परिणाम

डॉ महेश कौशिक

अध्येता, वैश्विक अध्ययन केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्ष 2022 जाते–जाते तीन पार्टियों को तीन राज्यों में तीन प्रकार के चुनाव परिणाम देकर आशा की एक किरण दी है। गत वर्ष में नवंबर– दिसंबर माह में 2 राज्यों, गुजरात तथा हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव तथा दिल्ली में नगर निगम के चुनाव संपन्न हुए।

गुजरात भाजपा के लिए सुनहरा दिन और अन्य पार्टियों की रात

गुजरात चुनाव पर देश की ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की नजर थी। क्योंकि गुजरात को केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा का गढ़ माना जाता है जहां पिछले 27 वर्षों से भाजपा शासन में है। यदि पिछले चुनाव की हम बात करें तो पिछली बार भाजपा की सीटें 100 से कम हो गई थी और कांग्रेस ने भाजपा के लिए अच्छी चुनौती प्रस्तुत की थी। इसलिए इस बार यह प्रश्न था कि क्या कांग्रेस इस बार भाजपा को कड़ी टक्कर दे पाएगी? दूसरी ओर दिल्ली और पंजाब में भारी बहुमत से सत्ता प्राप्त करने के बाद आम आदमी पार्टी के हौसले बुलंदी पर थे। और वह दावा कर रही थी कि गुजरात चुनाव में वह फिर से दिल्ली और पंजाब की भांति एक बड़ा उलटफेर करने जा रही है और भारी बहुमत से सत्ता प्राप्त करने जा रही है। केजरीवाल जी ने अनेक स्थानों पर लिखित में दावा किया था कि उनके अनेक प्रत्याशी अपने विरोधी प्रत्याशियों को भारी अंतर से हरा रहे हैं। किंतु भाजपा ने केजरीवाल जी के कागज पर लिखे दावों को अपनी बड़ी जोत से कागजी साबित कर दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय के शोध केंद्र, वैश्विक अध्ययन केंद्र द्वारा किए गए चुनाव पूर्व सर्वेक्षण में भी भाजपा की भारी जीत का दावा किया गया था और साथ ही कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की सीटों की संख्या इकाई में ही सिमटने की आशंका जताई गई थी। परिणाम भी इसी प्रकार के चौकाने वाले रहे और भाजपा ने सभी रिकॉर्ड तोड़ते हुए इस बार सबसे अधिक 156 सीटें विधानसभा चुनाव में प्राप्त की। यह गुजरात में किसी भी पार्टी के लिए अभी तक की मिलने वाली सबसे बड़ी जीत है। आम आदमी पार्टी द्वारा पूरे दमखम से गुजरात विधानसभा का चुनाव लड़ने से अनेक सीटों पर मुकाबला त्रिकोणीय बनने लगा जिसका सीधा लाभ भाजपा को प्राप्त हुआ। भाजपा की यही रणनीति भी थी और साथ ही प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस चुनाव

को गुजराती अस्मिता से जोड़ा जिससे गुजराती मतदाता ने दिल्ली से गुजरात पहुँची आम आदमी पार्टी को पूरी तरह से नकार दिया। निश्चित रूप से इस जीत से भाजपा को न केवल 2024 के राष्ट्रीय चुनाव के लिए शक्ति प्राप्त होगी अपितु पूरे देश में यह संदेश देने में भी सहायता मिलेगी कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का प्रभाव केवल केंद्र के चुनावां में ही नहीं अपितु राज्य के चुनावों में भी बना हुआ है। यद्यपि भाजपा की इस नीति की आलोचना विरोधी दल करते रहे हैं कि वह राज्यों के चुनाव और यहां तक कि नगर निगम के चुनाव भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर ही लड़ रही है। यह इस ओर संकेत करता है कि विधानसभा चुनावों में राज्यों के लिए और नगर निगम तक के चुनाव में भी भाजपा के पास मोदी जी के अतिरिक्त कोई विश्वसनीय चेहरा नहीं है। यद्यपि इस परंपरा को उत्तर प्रदेश के चुनाव में तोड़ने का प्रयास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया था।

दिल्लीः विधानसभा के बाद निगम भी हुआ आप का

दिल्ली विधानसभा में 2014 और 2019 में भारी भरकम जीत के बाद आम आदमी पार्टी ने 2022 में संपन्न हुए निगम चुनाव में भी जीत हासिल करते हुए दिल्ली नगर निगम में अपना मेयर बनाना निश्चित कर लिया है। वर्ष 2011 में दिल्ली की तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित जी द्वारा दिल्ली नगर निगम को तीन निगमों में बांटा गया था। 2022 में होने वाले चुनावों से ठीक पहले केंद्र सरकार द्वारा पुनः इन तीनों निगमों का विलय करके एक निगम बना दिया गया। माना जा रहा है कि इसका भाजपा को यह लाभ मिला कि आम आदमी पार्टी द्वारा जो दावा किया जा रहा था कि वह नगर निगम चुनाव में भी बहुत बड़ी जीत के साथ अन्य दोनों पार्टियों, कांग्रेस और भाजपा को पूरी तरह से निगम से साफ करने जा रही है, यह सही सिद्ध नहीं हो पाया। और भाजपा ने निगम चुनाव में आम आदमी पार्टी को कड़ो टक्कर दी। यद्यपि आम आदमी पार्टी ने 250 में से 134 सीटे जीतकर भाजपा और कांग्रेस को निगम चुनाव में बहुत पीछे छोड़ दिया । किन्तु सबसे बुरी स्थिति कांग्रेस की रही जिसकी सीटें दहाई के अंकों में भी नहीं पहुंच पाई। निश्चित रूप से कांग्रेस के लिए यह अभी तक की सबसे बुरी हार है। कांग्रेस के लिए यह दोहरी चिंता का विषय है कि दिल्ली और गुजरात, जहां कांग्रेस ने लंबे समय तक शासन किया है वहां उसकी इतनी बुरी स्थिति हो गई है। दिल्ली नगर निगम चुनाव में तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कांग्रेस मानो चुनाव लड़ ही नहीं रहो है। यद्यपि 1958 से जब से दिल्ली में नगर निगम बना तभी से अधिकांश रूप से निगम में भाजपा का ही वर्चस्व रहा है किंतु इससे पहले तीन बार कांग्रेस भी दिल्ली नगर निगम में अपनी सरकार बना चुकी है। किंतु जब–जब भी भाजपा नगर निगम में सत्ता में आने में सफल रही तब भी कांग्रेस की इतनी बुरी हुई स्थिति इतिहास में कभी नहीं रही जितनी

इस बार हुई है। निगम चुनाव में आम आदमी पार्टी की जीत को वैश्विक अध्ययन केंद्र द्वारा किए गए चुनाव पूर्व सर्वेक्षण की सहायता से आसानी से समझा जा सकता है। दिल्ली का सामाजिक और आर्थिक समीकरण जो पहल कांग्रेस के लिए पूरी तरह अनुकूल था वह अब आम आदमी पार्टी ने अपने पक्ष में कर लिया है। जिसमें मुस्लिम समुदाय, अनुसूचित जाति तथा निम्न आय और बढ़ते खर्च के कारण सुविधाओं की चाहत रखने वाला निम्न मध्यमवर्गीय समाज है। इस समीकरण ने दिल्ली में विधानसभा आर अब निगम चुनाव में आम आदमी पार्टी के पक्ष में अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया है जिसका उत्तर भाजपा के पास भी नहीं है। क्योंकि न तो वह कांग्रेस को ही दिल्ली में मजबूती से लड़ने के लिए तैयार कर सकती है और ना ही वह मुस्लिमों की पहली पसंद बन सकती है। अनुसूचित जाति को रिझाने के लिए अवश्य ही भाजपा ऐड़ी से चोटी तक का जोर लगा रही है। किंतु फिर भी अनेक राज्य जीतने के बाद भी भाजपा के लिए दिल्ली अभी दूर ही है।

हिमाचल प्रदेश ने बनाए रखी परंपरा

हिमाचल प्रदेश ने सभी पोल एजेंसी के सर्वेक्षणों को गलत सिद्व करते हुए अपनी सैंतीस वर्षों से चल रही परंपरा को बनाए रखा और सत्ता में फिर से परिवर्तन कर दिया। इसका एक कारण यह भी है कि आम आदमी पार्टी ने अपना पूरा दमखम गुजरात चुनाव को जीतने पर लगाया क्योंकि वहां आम आदमी पार्टी को चुनाव लड़ने का दोहरा लाभ था। एक और भाजपा को उसी का गढ़ माने जाने वाले गुजरात में सीधे चुनौती देखकर वह न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपित अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लगातार सुर्खियों में बनी रहे। और दूसरा, दस प्रतिशत वोट पाकर उसका राष्ट्रीय पार्टी बनने का लक्ष्य भी वहाँ से सरलता से पूरा होता दिख रहा था। अपने सीमित कैडर के साथ आम आदमी पार्टी एक साथ तीनों राज्यों में कार्य नहीं कर सकती थी। इसलिए उसने दिल्ली और गुजरात को चुना। दिल्ली में जहां वह निगम चुनाव में सत्ता पाने में सफल रही वहीं गुजरात में यद्यपि उसे केवल 5 सीट ही प्राप्त हुई किंतु राष्ट्रीय पार्टो बनने का उसका सपना गुजरात ने पूरा कर दिया। भाजपा हिमाचल प्रदेश में उत्तराखंड की सफलता को दोहराना चाहती थी और हिमाचल प्रदेश में जो परंपरा बना रखी थी उसे तोड़ना चाहती थी किंतु टिकट वितरण से नाराज कार्यकर्ताओं को मनाने में पार्टी असफल रही तथा अग्निवीर योजना का भी हिमाचल में भारी विरोध भाजपा को भारी पड़ा।

इस प्रकार तीन राज्यों ने तीन प्रकार के परिणाम देकर के तीनों ही पार्टियों को किसी ना किसी रूप में संदेश और आशा की किरण दी है। भाजपा जहां ऐतिहासिक बहुमत के साथ गुजरात का अपना किला बचाने में सफल रही वहीं आम आदमी पार्टी दिल्ली में पहली बार निगम चुनाव जीतने

में सफल रही तो वहीं कांग्रेस हिमाचल प्रदेश में सत्ता में आकर अपनी साख बचा पाई। यद्यपि राहुल गांधी के नेतृत्व में चल रही भारत जोड़ों यात्रा यदि गुजरात और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों से आरंभ होती तो संभव है इसका कुछ लाभ कांग्रेस को अवश्य प्राप्त होता है किंतु कांग्रेस के रणनीतिकारों की योजना कुछ अलग रही होगी जिस पर अब प्रश्न उठने लगे हैं। इसी के साथ साथ राहुल गांधी को अपनी नेतृत्व क्षमता को सिद्ध करने का दबाव भी लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में वर्ष 2024 में केंद्र की सत्ता के लिए होने वाले चुनावों में कम से कम अभी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के रहते हुए भाजपा के लिए कोई मजबूत चुनौती नहीं दिखाई पड़ती।

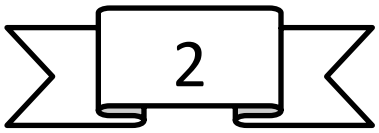

हिमाचल प्रदेश की राजनीति में मतदान व्यवहार का अध्ययन

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

विकास यादव

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिमाचल प्रदेश भौगोलिक व ऐतिहासिक दृष्टि से भारत के अन्य सभी राज्यों से अत्यधिक भिन्न है। राज्य की जनसंख्या सजातीय रूप से अधिक है। प्रायः हिमाचल प्रदेश राज्य में शांतिप्रिय लोगों का निवास है। जिसमें कि हिमाचल–वासी अपने प्रदेश की राजनीति में क्षेत्रीय विचारों को अधिक दर्शाते है। ऐतिहासिक रूप से राज्य में दो दलों का अस्तित्व देखा जाता है। हिमाचल वासियों का मतदान व्यवहार अंतसंबंधित कारकों से प्रभावित हो रहा है। जिसमें कि क्षेत्रीय विचार अत्यधिक अहम रहे ह।

परिणामस्वरूप हिमाचल प्रदेश के संबंध में वैश्विक अध्ययन केंद्र, दिल्ली विश्वविधालय के द्वारा एक विस्तृत अध्ययन किया गया है। जिसमें कि अलग–अलग विधानसभाओं मे जाकर हिमाचल की परिवर्तन राजनीति को समझने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन को स्वतंत्र और स्वायत रूप से पूर्ण करने का प्रयास किया गया है, जिसका आधार समग्रता, सामूहिकता व समन्वयता रहा है। हिमाचल प्रदेश राज्य का यह विस्तृत अध्ययन इस राज्य की चुनावी राजनीति पर राजनीतिक दलों के प्रभाव व उनकी भूमिका को जानने के लिए किया गया है। हिमाचल प्रदेश की राजनीति को समझने में इस प्रदेश के मतदाता विशेष रूप से मूक (Silent) मतदाता जिसके अंतर्गत विशिष्ट रूप से महिलाओं व युवा मतदाताओं के विचारों से अधिक सिद्ध व सार्थक प्रतीत होती प्रदर्शित हो रही हैं।

हिमाचल प्रदेश के मत व्यवहार में एक शांतिप्रिय राजनीति की स्वस्थ प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है। प्रदेश के विधानसभा चुनाव के फील्ड विजिट विश्लेषण द्वारा यह प्रकट होता है कि जाति, धर्म, संप्रदाय व वंश पर आधारित राजनीति, राज्य में निम्न जातियों के बावजूद भी राज्य में खड़ी होती

प्रदर्शित नहीं हो रही ह। यह अध्ययन यह प्रकट करता है कि यहाँ पहाड़ी व प्लैन इन दो क्षेत्रों में भाषा, संस्कृति, जाति व्यवस्था, क्षेत्रीय व्यवहार तथा सामाजिक रीति–रिवाज भिन्न–भिन्न है। कुछ महत्वपूर्ण कारकों व मुद्दों ने हमें इस फील्ड विजिट के दौरान प्रभावित किया। कि यहाँ किसी भी दल का कोई करिश्माई नेतृत्व व नेता नहीं है। और इसके साथ ही अधिकतर राजनीतिक नेता चाहे वो भारतीय जनता पार्टी से हों या काँग्रेस से या निर्दलीय रूप से चुनाव लड़ रहे हो, सभी अवसरवादी होते है, जिसे हिमाचल–वासी पसंद नहीं कर रहे ह। जो कि हिमाचल प्रदेश की राजनीति में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता हैं। और इसके साथ ही दलीय संगठनों के मध्य गुटबन्दी भी एक कारक कहा जा सकता ह।

राज्य में आज के समय में मतदान व्यवहार को कौन–कौन से मुद्दे व स्थितियाँ प्रभावित कर रही, उन सभी मुद्दों को अन्वेषण करने का प्रयास इस अध्ययन का रहा ह। आज के समय में मतदाता अपने राजनीतिक अधिकारों व राजनीतिक भागीदारी के प्रति अधिक जागरूक है। प्रदेश में लोग अब नए मुद्दों को लेकर आ रहे है जैसे कि नए विश्वविधालय, नए अस्पताल खोले जाए और राजनीतिक दल जो भी सत्ता में आए वो राजनीति करने के बजाए उनकी बेरोजगारी का समाधान कर सके। विकास व अभिशासन जैसे मुद्दों पर काम कर सके।

हिमाचल प्रदेश में महिलाओं, युवाओं व बुजुर्ग मतदाताओं के अलग–अलग विचार रहे हैं। जहां युवा वर्ग ने अच्छी शिक्षा, रोजगार जैसे मुद्दों के द्वारा परिवर्तन की बात कर रहा है। और नई शिक्षा नीति को लेकर भी युवाओं के विचार अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे है कि क्या वास्तविकता में इस नई शिक्षा नीति से अब हमारे शिक्षा के क्षेत्र में नए परिवर्तन हो सकते ह? इसके साथ ही महिलाओं के विचार युवा मतदाताओं से थोड़े भिन्न रहे। इस प्रदेश में महिलाओं के साथ एक रोचक बात यह रही कि महिलाएं अधिकतर साइलन्ट मतदाता के रूप के नजर आई। ये वो महिलाएं है जो अपन मत को गुप्त रख और चुनाव के समय अपने मत का प्रयोग कर नये राजनीतिक परिवर्तन करती नजर आई। विशेषकर महिलाओं ने एक नई बात को हमारे समक्ष रखा कि सरकारों को पारदर्शिता व जवाबदेही के साथ काम करने की आवश्यकता ह जिससे राज्य में सकारात्मक परिवर्तन हो सके। इसके अतिरिक्त बुजुर्ग मतदाताओं से भी उनकी राय ली गई उनका मानना है कि हमें उस सरकार का शासन नहीं चाहिए जो फ्री बिजली, फ्री पानी दे। हमे वो सरकार चाहिए, जो सुशासन व विकास प्रदान कर सके। हिमाचल प्रदेश में अधिकतर विधानसभाओं में मतदाता एक सकारात्मक परिवर्तन की मांग करता दिखाई दे रहा हैं।

अंततः वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक माध्यम से यह चुनावी अध्ययन दिल्ली विश्वविधालय के शोधकर्ताओं के द्वारा किया एक स्वतंत्र व स्वायत सर्वेक्षण है जो कि हिमाचल प्रदेश की सभी विधानसभाओं मे

ऑनलाइन व ऑफलाइन माध्यम से किया गया। जिसका मूल आधार समग्रता व समन्वयता रहा। उह चुनावी सर्वेक्षण नियोजित व उद्देश्यपूर्ण अभ्यास रहा है जो युवा शोधकर्ताओं के चुनावी अध्ययन के अभिविन्यास को नई ऊचाइयां प्रदान करेगा।

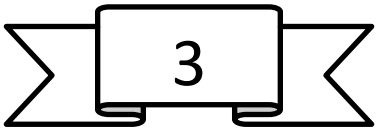

हिमाचल प्रदेश व गुजरात राज्य में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन

चंद्रिका आर्य

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टि साह

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

किसी भी देश की चुनावी राजनीति को समझने के लिए वहां के मतदान व्यवहार को समझना आवश्यक है। वर्तमान युग में जब भारत की राष्ट्रीय राजनीति बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, मतदाताओं के मतदान व्यवहार का अध्ययन करना अति आवश्यक है। हाल ही में संपन्न हुए हिमाचल प्रदेश व गुजरात राज्य में विधानसभा चुनाव राजनीतिक विश्लेषकों के मन में कई प्रश्न पैदा करते हैं। अगर हम इन राज्यों के चुनाव परिणाम का विश्लेषण करें तो हमें यहां के मतदान के तरीकों को समझना होगा। साथ ही यह देखना भी आवश्यक है की मतदाता चुनाव के दौरान अपनी प्राथमिकता कैसे तय करते हैं? वह कौन से मुख्य कारक है जो उन्हें किसी पार्टी के पक्ष या विरोध में अपना मतदान करने के लिए तैयार करते हैं? इसी संदर्भ में यह आलेख हिमाचल प्रदेश व गुजरात राज्य विधानसभा चुनाव 2022 में मतदाताओं के मतदान व्यवहार का अध्ययन करेगा। यह आलेख दिल्ली विश्वविद्यालय के वैश्विक अध्ययन केंद्र द्वारा करवाए गए हिमाचल प्रदेश और गुजरात विधानसभा चुनाव 2022 के सर्वेक्षण पर आधारित है।

हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव परिणाम 2022 का विश्लेषणः

हिमाचल प्रदेश के चुनाव परिणाम घोषित होने से पहले सबके मन मस्तिष्क में एक ही प्रश्न था क्या भारतीय जनता पार्टी सत्ता में वापसी कर पाने में सफल होगी या हिमाचल की जनता एक बार फिर अपनी प्रथा को आगे बढ़ाने में सफल होगी? 8 दिसंबर 2022 को घोषित हुए राज्य के चुनाव परिणाम से साफ हो गया की हिमाचल वासियों ने कांग्रेस पार्टी को विजयी बनाकर अपने राजनीतिक इतिहास की परंपरा को आगे बढ़ाया है।

परिणाम आने से पहले भाजपा नेता उम्मीद कर रहे थे कि उत्तराखंड राज्य की भांति हिमाचल प्रदेश में भी हर बार सरकार बदलने का रिवाज टूट जाएगा और पार्टी पुनः सरकार बनाने में सफल होगी। इसके लिए भारतीय जनता पार्टी ने हिमाचल प्रदेश चुनाव प्रचार में उत्तराखंड राज्य के चुनाव परिणामों को उदाहरण के रूप में पेश किया परंतु अनेकों प्रयास के बावजूद भी पार्टी सत्ता बचा पाने में असफल रही। यहां पर महत्वपूर्ण यह है कि देशभर में चल रहे मोदी फैक्टर हिमाचल प्रदेश की राजनीति में क्यों काम नहीं कर पाया? हिमाचल प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के क्या मुख्य कारण रहे? इन प्रश्नों को संबोधित करने के लिए हमें हिमाचल प्रदेश राज्य के मतदान व्यवहार को समझना होगा।

दल को नहीं प्रत्याशी को दिया मतदान

वैश्विक अध्ययन केंद्र द्वारा किए गए हिमाचल प्रदेश चुनावी सर्वेक्षण से पता चलता है कि हिमाचल के नागरिकों के लिए विकास व सुशासन का मुद्दा अन्य सभी मुद्दों से सर्वोपरि है। पहाड़ी राज्य में मतदान व्यवहार बाकी भारत के मतदान व्यवहार से अलग देखने को मिलता है। यहां की चुनावी राजनीति में जाति, धर्म, भाषा, वर्ग जैसे परंपरागत कारक कोई खास अहमियत नहीं रखते हैं। यहाँ का मतदाता केवल निर्वाचित प्रतिनिधियों की कार्यशैली व कार्य की गुणवत्ता देखकर अपने मत निर्धारित करता है। इसमें एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हिमाचल प्रदेश में मतदाता अपने स्थानीय प्रतिनिधियों को ध्यान में रखकर मतदान करता है। सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश मतदाताओं ने अपने स्थानीय निर्वाचित प्रतिनिधि से नाराजगी व्यक्त कर सत्ता परिवर्तन करने की इच्छा जाहिर की, जोकि इस बार के चुनाव परिणाम से स्पष्ट होता है।

मुद्दा आधारित मतदान

सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश में मतदान पार्टी आधारित न होकर मुद्दा आधारित है, जिसमें वर्ष 2022 के चुनाव में सुशासन सर्वोपरि मुद्दा रहा। मुद्दा आधारित मतदान व्यवहार हिमाचल प्रदेश राज्य के राजनीतिक इतिहास से भी परिलक्षित होता है। हर बार राज्य के चुनाव में सत्ता परिवर्तन दर्शाता है कि पहाड़ी नागरिकों की कोई पार्टी संबद्धता या वैचारिक झुकाव नहीं है, बल्कि उनके लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों की जनता के प्रति कार्य निष्ठा अधिक महत्वपूर्ण है। यहां पर प्रश्न यह उठता है कि मुद्दा आधारित मतदान व्यवहार वाले राज्य हिमाचल प्रदेश में कौन से अहम मुद्दे थे जिन्होंने मतदाताओं को सत्ता परिवर्तन करने को मजबूर किया?

आधारिक स्तर पर मतदाताओं से बातचीत में पता चलता है कि इस बार हिमाचल प्रदेश में पहले से राज कर रही भारतीय जनता पार्टी द्वारा लाऐ गई ऐसे कई कानून व नीतियां थी जिनको लेकर

नागरिकों में बहुत अधिक रोष नजर आया जैसे अग्निपथ योजना, वस्तु एवं सेवा कर में वृद्धि, कीमतें की बढ़ती दर, महंगाई, युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी आदि। वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी द्वारा ओल्ड पेंशन स्कीम के वादे को लेकर हिमाचल वासियों में एक संतोष नजर आया और जनता ने इसका खुलकर समर्थन किया। कांग्रेस पार्टी हिमाचल की जनता को ओल्ड पेंशन स्कीम के माध्यम से उन्हें एक सुरक्षित भविष्य का भरोसा दिलवाने में सफल रही।

महंगाई का मुद्दा प्रभावशाली

हिमाचल प्रदेश की राजनीति में आम नागरिकों के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा था वह था वस्तुओं की आसमान छूती कीमतें। अधिकांश नागरिकों ने जीवन यापन को लेकर बढ़ती कठिनाइयों का खुलकर विवरण किया। उनका मानना है कि राज्य में महंगाई व बेरोजगारी दो प्रमुख समस्याएं हैं जिनका निवारण करने में भारतीय जनता पार्टी असफल रही। खास इन्हीं वजहों से मतदाताओं ने सरकार बदलने की राय व्यक्त की। उनका मानना था की महंगाई को रोकने के लिए दूसरी पार्टी को मौका देना होगा इसके लिए उन्होंने कांग्रेस पार्टी का विकल्प सामने रखा। कुछ विधानसभा क्षेत्रों में आम आदमी पार्टी का नाम भी विकल्प के रूप सामने आया।

मतदाताओं ने पुरानी पेंशन योजना के वादे में दिखाया विश्वास

इस बार हिमाचल प्रदेश राज्य की चुनावी राजनीति में ओल्ड पेंशन स्कीम का मुद्दा जोरों पर था। कांग्रेस पार्टी ने चुनाव प्रचार में राजस्थान, झारखंड व छत्तीसगढ़ की भांति हिमाचल प्रदेश में भी यह योजना लागू करने का वायदा किया। ऑफलाइन सर्वेक्षण से पता चलता है कि हिमाचल के मतदाता इस योजना से मात्र परिचित ही नहीं बल्कि इसका खुलकर समर्थन कर रहे थे। हालांकि कुछ मतदाताओं ने कांग्रेस पार्टी द्वारा किए गए ओल्ड पेंशन स्कीम के एलान को लेकर संदेह व्यक्त किया कि पार्टी इसको लागू करवाने में सफल नहीं होगी। परंतु कांग्रेस पार्टी बड़ी संख्या में मतदाताओं को अपनी ओर खींचने में सफल रही।

अग्निपथ योजना के विरुद्ध आक्रोश

हिमाचल प्रदेश राज्य के 2022 चुनाव में दूसरा ज्वलंत मुद्दा था हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा लाई गई अग्निपथ योजना। इस योजना के तहत भारतीय सेना में सैनिकों की नियुक्ति 4 वर्ष के लिए कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर की जाएगी। बड़ी संख्या में भारतीय सेना में सेवा दे रहे नागरिकों वाले पहाड़ी राज्य में इस योजना के विरुद्ध मतदाताओं ने खुलकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की, स्थानीय लोगों का मानना है कि यह योजना युवाओं के कैरियर के लिए खतरा पैदा करती है जिससे भविष्य में उन्हें रोजगार के संकट का सामना करना होगा।

किसानों व युवाओं में बढ़ता असंतोष

हिमाचल प्रदेश राज्य में कृषि आय का एक मुख्य स्रोत है यही कारण है कि कृषि संबंधी जनकल्याण योजनाएं नागरिकों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करती हैं। हाल ही में किए गए वस्तु एवं सेवा कर में वृद्धि तथा सब्सिडी को हटाना जैसी योजनाओं के परिणाम स्वरूप किसानों में असंतोष दिखाई दिया। वहीं दूसरी ओर पहाड़ी क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर ना मिल पाने के कारण युवाओं तथा उनके परिवार जनों में अपने बच्चों के भविष्य को लेकर एक नकारात्मकता नजर आई। युवाओं का मानना है की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी उन्हें अपने गृह राज्य में रोजगार के उचित अवसर नहीं मिल पाते हैं जिसके कारण मजबूरी वश उन्हें बाहर बड़े महानगरों की ओर पलायन करना पड़ता है।

प्रदेश में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी तथा केंद्र सरकार द्वारा लाई गई अग्निपथ योजना की कीमत भारतीय जनता पार्टी को हिमाचल प्रदेश में चुकानी पड़ी इसी कारण पार्टी के वोट कट कर कांग्रेस पार्टी के खाते में चले गए। चूंकि भाजपा प्रदेश में महंगाई व बेरोजगारी को रोकने में असफल रही और अग्निपथ योजना के परिणाम स्वरूप नागरिकों को अपना भविष्य संकट में महसूस होने लगा वहीं दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी द्वारा किए गए पुरानी पेंशन योजना के वायदे में उन्हें एक सफल और सुरक्षित भविष्य की उम्मीद दिखाई दी।

भारत की वर्तमान चुनावी राजनीति में जोरों से चल रहे मोदी फैक्टर का हिमाचल प्रदेश की राजनीति में विफल होने का मुख्य कारण यही है कि हिमाचल प्रदेश की जनता ने 2022 में स्थानीय मुद्दों को ध्यान में रखकर अपना मत निर्धारित किया जिसमें पहले से शासन कर रही भारतीय जनता पार्टी आमजन की समस्याओ जैसे महंगाई व बेरोजगारी को रोक पाने में असफल रही। साथ ही अग्निपथ जैसी योजना ने युवाओं में उनके भविष्य को लेकर असंतोष पैदा किया। इसका खामियाजा पार्टी को चुनाव परिणाम में भुगतना पड़ा।

गुजरात विधानसभा चुनाव परिणाम 2022 का विश्लेषण

हिमाचल प्रदेश में मिली करारी हार के साथ भारतीय जनता पार्टी ने गुजरात राज्य में प्रचंड बहुमत के साथ एक ऐतिहासिक जीत हासिल की है। पिछले 3 दशकों से गुजरात राज्य में बिना किसी रूकावट के शासन कर रही भारतीय जनता पार्टी ने 182 सीट वाली गुजरात विधानसभा में अभी तक सबसे अधिक सीट जीतने का नया रिकॉर्ड बनाया है। यहां पर यह देखना आवश्यक है की भाजपा की प्रचंड बहुमत की इस ऐतिहासिक जीत के पीछे क्या कारण है। वैश्विक अध्ययन केंद्र

द्वारा किए गए गुजरात राज्य विधानसभा चुनाव सर्वेक्षण से राज्य के मतदान व्यवहार को समझने का प्रयास करें तो उसमें कुछ रोचक तथ्य सामने आते हैं, जिसमें मुख्यतः सम्मिलित हैः–

मोदी की लोकप्रियता व पार्टी की प्रथमिकता

गुजरात राज्य में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक जीत के पीछे प्रमुख कारण है प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता। नरेंद्र मोदी का करिश्माई व्यक्तित्व लोगों को अपनी ओर खींचने में बाकी सभी कारकों पर भारी है। गुजरात के मतदाताओं को मोदी जी के व्यक्तित्व में अटूट विश्वास है यहां के लोग मोदो जी के व्यक्तित्व को ईश्वर तुल्य मानते हैं जिससे उन्हें भरोसा है की स्थिति चाहे जितनी भी विकट स्थिति हो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व उनके लिए समाधान के मार्ग अवश्य लेकर आएगा। नागरिकों ने कुछ समस्याओं को जरूर व्यक्त किया जैसे महंगाई व बेरोजगारी परंतु उन्होंने भरोसा दिखाया की वर्तमान समस्याओं का हल केवल मोदी जी के नेतृत्व द्वारा ही संभव है। जनता का मानना है कि मोदी है तो मुमकिन है। ज्यादातर मतदाताओं ने स्वीकार किया कि मोदी काफी हद तक उनकी समस्याओं को हल कर पाए हैं और आगे भी करेंगे।

भाजपा की ऐतिहासिक जीत के पीछे दूसरा मुख्य कारण है गुजरात राज्य के मतदान व्यवहार में पार्टी की प्राथमिकता। जमीनी स्तर पर आम नागरिकों से बातचीत में पता चलता है कि यहां की चुनावी राजनीति में पार्टी आधारित मतदान सर्वोपरि है। अधिकांश नागरिकों ने प्रत्याशियों के चेहरों को नकारते हुए पार्टी की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने केंद्र व राज्य स्तर पर राज कर रही भारतीय जनता पार्टी में गहरा विश्वास दिखाया तथा बड़े स्तर पर पार्टी से संतोष व्यक्त किया। उनका मानना है कि भारतीय जनता पार्टी केंद्र व राज्य दोनों स्तर पर अपने वायदों को पूरा करपाने में सफल रही है, जो कुछ स्थानीय स्तर पर समस्याएं हैं उसको पूरा कर पाने का भरोसा भी उन्होंने भारतीय जनता पार्टी में दिखाया।

राष्ट्रीय व राज्य मुद्दों की महत्ता

ऑफलाइन सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि गुजरात की चुनावी राजनीति में राष्ट्रीय व राज्य मुद्दे एक खास अहमियत रखते हैं स्थानीय मुद्दे मुख्य तौर पर मतदाताओं के मतदान व्यवहार को निर्धारित नहीं करते हैं। गुजरात विधानसभा 2022 के चुनाव में मतदाताओं ने राष्ट्रीय व राज्य मुद्दों को ध्यान में रखकर मतदान किया है। मतदाताओं से बातचीत में पता चलता है कि केंद्र सरकार द्वारा किए गए विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दों का हल जैसे अयोध्या मंदिर का निर्माण कार्य, जम्मू कश्मीर से धारा 370 का खत्म करना उनके लिए चुनाव में अहम मुद्दे थे। केंद्र सरकार द्वारा लिए गए यह निर्णय गुजराती मतदाताओं के लिए भारतीय जनता पार्टी की उपलब्धियां है जो उन्हें राज्य में भी पार्टी

की तरफ आकर्षित करते हैं। इसके अलावा गुजरात राज्य में भाजपा द्वारा किए गए संरचनात्मक विकास कार्य जैसे कि स्टैचू ऑफ यूनिटी का निर्माण, अटल ब्रिज का निर्माण, रिवर फ्रंट यहां के मतदाताओं के लिए खास अहमियत रखते हैं उनका मानना है कि बीजेपी ने राज्य में विकास के अनेकों कार्य किए हैं। हालांकि कुछ मतदाताओं के द्वारा महंगाई, बेरोजगारी व गरीबी की समस्याओं को भी सामने रखा गया परंतु लोगों ने विश्वास दिखाया की अगर भारतीय जनता पार्टी सत्ता में होगी तो इन समस्याओं का निवारण भी जल्द ही संभव होगा

विकास व सुशासन पड़ा महंगाई पर भारी

गुजरात में अधिकांश मतदाताओं ने महंगाई की समस्या को स्वीकार किया। उनके लिए महंगाई व वस्तुओं की बढ़ती कीमतें उनके जीवन की एक प्रमुख समस्या है। परंतु यह समस्या पहले से सत्ता प्राप्त भारतीय जनता पार्टी के वोटशेयर को कम कर पाने में असफल रही। चुनावी मैदान में उतरी अन्य राजनीतिक पार्टियां जैसे आम आदमी पार्टी व कांग्रेस इस समस्या के निवारण के लिए जनता में विश्वास पैदा नहीं कर पाई बल्कि इसके ठीक उलट जनता ने महंगाई व बेरोजगारी जैसी समस्याओं को हल करने का भरोसा भाजपा में दिखाया है। मतदाताओं का कहना था की भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश में अनेकों काम किए हैं तथा जन कल्याण के लिए जनता को अनेकों लाभ पहुंचाने का कार्य किया है। महंगाई व बेरोजगारी जैसी कुछ समस्याएं मौजूद है जिनका निवारण भी पार्टी आने वाले समय में सुनिश्चित करेगी। भारतीय जनता पार्टी में गुजरात के नागरिकों का ऐसा गहरा विश्वास ही जनता को अपनी ओर खींच पाया है। यही कारण है कि महंगाई की समस्या राज्य के चुनाव में अपना कोई प्रभाव नहीं दिखा पाई।

लोकलुभावनवाद नहीं जनकल्याणवाद को किया स्वीकार

गुजरात विधानसभा 2022 चुनाव प्रचार में आम आदमी पार्टी के लोकलुभावन वादे व भाजपा द्वारा लाई गई जनकल्याण योजनाएं एक बहस का मुद्दा बनी रहे। जनता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए आम आदमी पार्टी द्वारा फ्री बिजली व पानी देने का ऐलान किया गया। मतदाताओं से बातचीत में स्पष्ट होता है कि आम आदमी पार्टी की लोकलुभावन वाद की नीतियां गुजरातियों को स्वीकार नहीं है इसके ठीक विपरीत मतदाताओं ने भाजपा द्वारा क्रियान्वित जनकल्याण की योजनाओं का जमकर समर्थन किया। केंद्र व राज्य सरकार द्वारा दिए गए मुफ्त राशन, दवाइयां, आवास योजना व किसान सम्मान निधि योजना जैसे प्रयास जनता को भाजपा की ओर खींचने में सफल रहे। इसी के परिणामस्वरुप जनता ने भारी मात्रा में भाजपा के पक्ष में मतदान किया।

इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किए गए राज्य में चुनाव प्रचार को भी श्रेय जाता है। नरेंद्र मोदी जनता को यह भरोसा दिलाने में सफल रहे कि मुफ्त की संस्कृति देश के विकास के लिए घातक है। इसी के परिणामस्वरूप आम आदमी पार्टी द्वारा मुफ्त बिजली, पानी के एलान के बावजूद जनता ने जनकल्याण की योजनाओं के वितरण को महत्व दिया जो कि चुनाव में भारी मात्रा में भाजपा के पक्ष में हुए मतदान से सिद्ध होता है।

सर्वेक्षण के माध्यम से स्पष्ट होता है कि गुजरात राज्य में भारी मात्रा में हुआ भाजपा के पक्ष में मतदान मुख्य रूप से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के करिश्माई नेतृत्व तथा केंद्र व राज्य स्तर पर पार्टी के प्रदर्शन को ध्यान में रखकर किया गया है।

निष्कर्षः

हिमाचल प्रदेश व गुजरात विधानसभा चुनाव के सर्वेक्षण के आधार पर हम कह सकते है कि दोनों राज्यों का मतदान व्यवहार एक दूसरे के विपरीत है। पहाड़ी राज्य का मतदाता मतदान करते समय प्रत्याशी को ध्यान में रखता है, उसके लिए पार्टी कोई महत्व नहीं रखती है। वहीं दूसरी तरफ गुजरात राज्य का मतदाता पार्टी को प्राथमिकता देता है, उसके लिए प्रत्याशी का चेहरा कोई खास अहमियत नहीं रखता है। दूसरा हिमाचल प्रदेश के नागरिकों के लिए स्थानीय मुद्दं उनके मतदान व्यवहार को निर्धारित करते हैं। इसके ठीक उलट गुजरात राज्य में मतदाता राष्ट्रीय व राज्य मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं। 2022 के चुनाव अध्ययन से यह साफ होता है कि हिमाचल प्रदेश में कुछ ऐसे स्थानीय व क्षेत्रीय मुद्दें थे जिनको पहले से राज कर रही भारतीय जनता पार्टी सुलझाने में असफल रही जिसका परिणाम पार्टी को चुनाव में सत्ता खो कर भुगतना पड़ा। वहीं दूसरी ओर गुजरातीयों के लिए कुछ राष्ट्रीय व राज्य मुद्दें इतने महत्वपूर्ण थे कि उन्होंने क्षेत्रीय स्तर की समस्याओं को अनदेखा किया और भारतीय जनता पार्टी के केंद्र व राज्य स्तर पर प्रदर्शन को देखकर क्षेत्रीय स्तर की समस्याओं को अनदेखा करते हुए पार्टी का भारी मतों से विजयो बनाया।

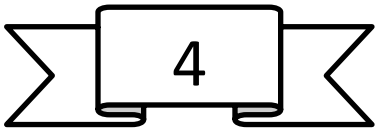

गुजरात विधानसभा चुनावः एक विश्लेषण

अमित बाजपेयी

एम कॉम शोधार्थी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

लोकतंत्र की खूबसूरती यही है कि जनता कब किसको आंखों पर चढ़ा ले और कब किसको उतार दे। कभी जब देश मे राजनीति की बात की जाती थी, तो कांग्रेस का कोई विकल्प नहीं था। तीन दशकों तक देश में कांग्रेस 'पैन इंडिया' पार्टी हुआ करती थी, किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण हाल ही में हुए गुजरात विधानसभा, दिल्ली नगर निगम के चुनावों ने दिखा दिया कि जनता के मन में राष्ट के सबसे पुराने दल के लिए कोई स्थान नहीं है। ये चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं कि जहां एक ओर कांग्रेस का पतन हो रहा है वहीं दूसरी ओर आम आदमी पार्टी स्वयं को कांग्रेस के विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर रही है। गुजरात चुनावों के पश्चात आम आदमी पार्टी को 4 राज्यों में राज्य दल का दर्जा प्राप्त हो गया है और वह अब देश का आठवाँ राष्ट्रीय दल है। वहीं दूसरी ओर भाजपा ने प्रधानमंत्री के गढ़ में अपने पैर और भी सुदृढ़ता से जमा लिए हैं परंतु दिल्ली और हिमाचल की जनता ने भाजपा की नीतियों को अस्वीकृत कर दिया है।

गुजरात चुनाव का विश्लेषण

आम आदमी पार्टी चुनाव से पूर्ण पूर्ण बहुमत से सरकार बनाने का दावा कर रही थी, किन्तु गुजरात की जनता ने मुफ्त की राजनीति से ऊपर बढ़कर सुशासन और विकास को चुना। लोग श्रीलंका के स्थितियों को जानते थे। और मानते थे कि मुफ्त की राजनीति देशहित में नहीं है। आम आदमी पार्टी के विभिन्न बड़े चेहरे जैसे मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार इशुदान गढ़वी, पाटीदार नेता अल्पेश कठिरिया और गोपाल इटालिया भी अपनी सीट नहीं बचा पाए, इसका एक कारण गुजरात में मोदी लहर भी माना जा सकता है। लोगों ने इन चुनावों मं भी प्रतिनिधि को नहीं अपितु मोदी को वोट दिया है। तथापि आम आदमी पार्टी के पास खोने को कुछ नहीं था फिर भी आम आदमी पार्टी लगभग 13% वोट के साथ 5 सीट प्राप्त करने में सफल रही और कांग्रेस को हानि पहुंचाई है।

भाजपा ने पिछले सभी रिकॉर्ड्स तोड़ और गुजरात के इतिहास में सबसे अधिक सीट जीतने का गौरव प्राप्त किया। भाजपा की जीत की एक वजह विपक्ष के पास मुद्दों का होते हुए भी जनता को

स्वयं पर विश्वास न दिला पाना था। इसके अतिरिक्त भाजपा की जीत का कारण मोदी सरकार के पिछले विकास कार्य और विपक्ष के पास किसी विशेषीकृत नेता का न होना भी था। पाटीदार वर्ग जो पिछले चुनावों में भाजपा से निराश था। एक बार फिर से भाजपा का चुनाव किया। भाजपा पूर्ण शक्ति के साथ इन चुनावों में उतरी थी, कारण स्पष्ट था। 2024 से पहले प्रधानमंत्री के गढ़ में ये कुछ सेमीफाइनल जैसा था। राजनीति विश्लेषक ऐसा भी मानते हैं कि भाजपा ने गुजरात चुनाव जीते किन्तु दिल्ली नगर निगम चुनावों की कीमत पर। जहां गुजरात में प्रधानमंत्री ने 30+ रैलियां की वहीं दिल्ली में उनकी एक भी जनसभा नहीं हुई।

कभी 149 सीट जीतकर रिकार्ड् बनाने वाली कांग्रेस को मात्र 17 सीट मिली। कारण स्पष्ट था कि कांग्रेस के पास कोई नामी चेहरा न होना। स्वयं कांग्रेस का आलाकमान जैसे राहुल गांधी, सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी भी गुजरात चुनावों से दूर रहे, जो कि समझ से बाहर है। गुजरात का जिम्मा वहां के स्थानीय नेताओं का सौंपा गया जो पूर्ण रूप से विफल हो गया। लोगों को कांग्रेस के प्रत्यशियों के नाम भी न पता होना बताता है कि कांग्रेस लोगों को स्वयं से जोड़ने में असफल रही है। आम आदमी पार्टी के होने से भी कांग्रेस को भारी हानि हुई है। आम आदमी के मैदान में होने से कांग्रेस की न केवल सीटें कम हुई हैं अपितु वोट शेयर में भी काफी कमी आई है। कांग्रेस के लिए सकारात्मक यह रहा कि हिमाचल जीतने के पश्चात यहाँ कांग्रेस की आम आदमी पार्टी से अधिक ही सीटें रहीं।

आगे की राह

2024 के लोकसभा चुनावों से पहले यह चुनाव सभी पार्टियों के लिए महत्वपूर्ण थे। आम आदमी पार्टी सिर्फ मुफ्त की राजनीति करके हर जगह चुनाव नहीं जीत सकती है। उनके स्थानीय नेताओं को संगठन के तौर पर और मजबूत होना पड़ेगा। लोगों के मुद्दों पर खुलकर सामने आना पड़ेगा और जनता को विश्वास में लेना होगा कि आम आदमी पार्टी जाति–धर्म की राजनीति से ऊपर उठकर लोगों के मुद्दों पर और विकास के नाम पर चुनाव लड़ती है।

दिल्ली नगर निगम और हिमाचल विधानसभा चुनाव के पश्चात भारतीय जनता पार्टी को भी आत्मचिंतन की आवश्यकता है। विश्व की सबसे बड़ी पार्टी होने का दंभ भरने वाली पार्टी को दिल्ली नगर निगम चुनावों में 1 दशक पहले आई पार्टी ने शिकस्त दी। भाजपा के शीर्ष नेताओं को इस पर गहन चिंतन की आवश्यकता है।

कषक आंदोलन हो या जामिया का छात्र आंदोलन, लोगों के मुद्दों पर खुलकर सरकार के विरुद्ध बोलने वाली पार्टी को जनता ने चुनावों में नकार रही है तो कांग्रेस आलाकमान को इसके पीछे

की वजह जानने पर काम करना होगा। कांग्रेस को पार्टी के अंदर की कलह को समाप्त कर जनता के मध्य पहुंचने पर काम करना होगा। दूसरी पार्टियों पर पराजय का ठीकरा फोड़ना सही नहीं है। स्थानीय नेताओं को हार की जिम्मेदारी लेनी होगी। कांग्रेस जब जब टूटी है और बुलन्दी के साथ खड़ी हुई है, अब देखना यह होगा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा और नए निर्वाचित अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे इन चुनावों के बाद किस तरह कांग्रेस को प्रभावित करते हैं।

संदर्भ–सूची

https://www.jansatta.com/rajya/gujarat-election-result-2022-analysis-five-reasons-for-bjp-record-win-in-gujarat-elections/2546395/

https://www.google.com/amp/s/www.amarujala.com/amp/india-news/gujarat-election-results-2022-analysis-bjp-equation-for-gujarat-vidhan-sabha-vs-mcd-chunav-know-significance

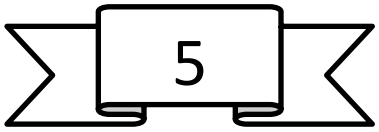

सी जी एस समीक्षा 2022– दिल्ली नगर निगम चुनाव

यश तनवर

स्वायत्त शोधार्थी

हम सभी जानते है, कि दिल्ली में 4 दिसंबर 2022 को नगर निगम के चुनाव हुए थे। हर पाँच वर्ष के पश्चात इस तरह की चीज हमें देखने को मिलती है, प्रत्याशी किस तरह से वोट माँगते है अपने क्षेत्र में जाकर। पूरी दिल्ली में नगर निगम के 250 वार्ड है और अधिक सारे उम्मीदवार अपना–अपना दावा प्रस्तुत करते है। वैसे तो इन चुनावो में अधिकतर दल को भी देखा जाता है और हमारे देश में 750 अधिकतर दल राज कर रही है किन्तु सबसे प्रभावशाली और काम करने वाली पार्टी तीन ही है।

(1) भारतीय जनता पार्टी

(2) कांग्रेस पार्टी

(3) आम आदमी पार्टी

अब हम बात करेंगे मतदान की तो कई क्षेत्रों में सर्वेक्षण के द्वारा और लोगों की वार्तालाप से ज्ञात होता है कि इन चुनावों में लोगों की सोच बड़ी विषेश प्रकार की होती है– कोई कहता है कि सबसे अच्छा काम दिल्ली में आप की सरकार कर रही है और कुछ व्यक्ति कहते हैं कि हमारे क्षेत्र से जिस प्रत्याशी की आप पार्टी ने टिकट दी वो एक अपराधी व्यक्ति है, ये ही बात लोग भा.जा. पा. के लिए भी बोलते है।

अब कुछ मतदाताओं ने कहा कि हम कांग्रेस पार्टी के, जो उम्मीदवार है हम उसको वोट करेंगे क्योंकि उसने हमारे क्षेत्र के लिए काम किया है। ये नगर निगम के चुनाव काफी ज्यादा अलग होते हैं। यहाँ पर पार्टी के साथ साथ जिस उम्मीदवार को पार्टी ने टिकट देकर चुनाव में खड़ा किया है उसका व्यक्तित्व देखा जाता है। यह चुनाव विधानसभा और लोकसभा से अधिक भिन्न होते हैं। पार्टी की छवि के साथ–साथ प्रत्याशी के चरित्र को देखते है कि वो अच्छा व्यक्ति है या नहीं।

मतदाताओं ने आप पार्टी को ही अधिक पंसद किया है और सबसे अधिक सीटों से जीत भी उसी ने प्राप्त की है। उस क्षेत्र जहां से आप पार्टी की अच्छी जीत हुई थी विधानसभा में परन्तु नगर निगम के चुनावों में वहां से उन्हें हार मिली है। प्रत्येक पार्टी का एक अपना नारा, अपना मुद्दा, और अपनी किये कुछ काम होते है जो उन्हें बहुमत प्रदान करते हैं। साथ ही ऐसे चुनावों के होने से यह भी पता चलता है कि कौन सी पार्टी कितने अच्छे उम्मीदवार को खड़ा कर रही है, और ऐसे लोगों को ला रही है जो भ्रष्टाचार फैला रही है।

पंक्ति के माध्यम सेः–

''चुनाव जीतो पर एक अच्छा उम्मीदवार लाओ

दश को एक सही दिशा प्रदान करो

लेकिन धर्म जाति में मत बांटो

प्रत्याशो इतना गुणवान हो

कि सब काम में आगे हो''

अब हमारे देश का व्यक्ति जागरूक हो रहा है और वो चाहता है कि एक ऐसा व्यक्ति चुनाव में खड़ा हो जो हमारे क्षेत्र और देश के लिए काम आए, पत्येक पार्टी अपनी एक नोति बनाती ह चुनाव जीतने के लिए, किन्तु वोट हमेशा लोग उसे ही देते है, जो नागरिकों के हितों के लिए काम करती रहा ह।

कुछ उम्मीदवार निर्दलोय भी खड होते है और अपने आप पर विश्वास रखकर चुनाव जीतते है क्योंकि उन्हें पता है कि हमने अपने समाज के लिए काम किया है। कुछ क्षेत्रों में आज भी लोग जाति धर्म को अधिक मानते है जैसेः– मुस्लिम क्षेत्रों में मतदाताओं को यह उम्मीद होती है कि हम मुस्लिम प्रत्याशो को ही वोट करेंगे और कुछ लोगों का विचार है कि हमारी जाति वाला उम्मीदवार है तो हमारा कल्याण यही करेंगा तों हमें उसी को अपना मत देना चाहिए। युवा पीढ़ी थोड़ा सा परिवर्तन देखने को मिला है वो एक ऐसे व्यक्ति को चाहते है जो समाज की और देश की भलाई कर सके। चुनाव प्रक्रिया अत्यधिक भिन्न होती है, यहाँ प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण भिन्न है। वह अपना विचारकर और अपने हित को देखते हुए करना है।

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281